तोड़ों का दृष्टान्त

भण्डारीपन के दृष्टान्त (भाग–2)

***रविवार का उपदेश*, 12 *जुलाई*, 2026**

हम यीशु के भण्डारीपन (Stewardship) के दृष्टांतों पर अपना अध्ययन जारी रखते हैं। हमारा इरादा परमेश्वर के राज्य के दृष्टिकोण से भण्डारीपन को समझना है, ताकि हम स्वयं को उस चीज़ के अनुरूप ढाल सकें जो परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है।

पिछले रविवार हमने बुद्धिमान सेवक के दृष्टांत को देखा था।
आज हम **तोड़ों के दृष्टांत (The Parable of the Talents)** पर विचार करेंगे।

मत्ती 25:14-30 (लूका 19:11-27 भी देखें)

> 14 "क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा है, जिस ने परदेश जाते समय अपने दासों को बुलाकर अपनी संपत्ति उनको सौंप दी।
> 15 उस ने एक को पांच तोड़े, दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्थात् हर एक को उसकी सामर्थ के अनुसार दिया, और तुरंत परदेश चला गया।
> 16 तब जिस को पांच तोड़े मिले थे, उस ने जाकर उनसे लेन-देन किया, और पांच और कमाए।
> 17 इसी रीति से जिस को दो मिले थे, उस ने भी दो और कमाए।
> 18 परन्तु जिसे एक मिला था, उस ने जाकर मिट्टी खोदी, और अपने स्वामी के रुपये छिपा दिए।
> 19 बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी आया, और उनसे लेखा लेने लगा।
> 20 जिसे पांच तोड़े मिले थे, उस ने पांच तोड़े और लाकर कहा; 'हे स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे, देख, मैं ने पांच और कमाए हैं।'
> 21 उसके स्वामी ने उससे कहा, 'धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास; तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।'
> 22 और जिसे दो तोड़े मिले थे, उस ने भी आकर कहा, 'हे स्वामी, तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे, देख, मैं ने दो और कमाए हैं।'
> 23 उसके स्वामी ने उससे कहा, 'धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास; तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।'
> 24 "तब जिसे एक तोड़ा मिला था, उस ने आकर कहा, 'हे स्वामी, मैं तुझे जानता था कि तू कठोर मनुष्य है; तू जहां नहीं बोता वहां काटता है, और जहां नहीं छींटता वहां बटोरता है।
> 25 इसलिये मैं डर गया, और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया। देख, जो तेरा है वह यह है।'
> 26 "उसके स्वामी ने उसे उत्तर दिया, 'हे दुष्ट और आलसी दास, जब तू यह जानता था कि मैं वहां काटता हूं जहां मैं ने नहीं बोया, और वहां बटोरता हूं जहां मैं ने नहीं छींटा।

> 27 तो तुझे चाहिए था कि मेरा रुपया सर्राफों (bankers) को दे देता, तब मैं आकर अपना धन ब्याज समेत ले लेता।
> 28 इसलिये वह तोड़ा उससे ले लो, और जिसके पास दस तोड़े हैं उसे दे दो।
> 29 'क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा, और उसके पास बहुत हो जाएगा; परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा।
> 30 और इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो; वहां रोना और दांत पीसना होगा।'

तोड़ों के दृष्टांत से भण्डारीपन पर आठ सबक

इस दृष्टांत का संदर्भ यह है कि जब प्रभु यीशु स्वर्ग चले गए हैं और हम उनकी वापसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो हमें क्या करना चाहिए। हम नहीं जानते कि वह कब लौटेंगे। तो जब तक वह नहीं आते, हम क्या करें? इसका स्पष्ट निष्कर्ष यह है कि हमें अच्छे भण्डारी (stewards) बनना है। और यह दृष्टांत हमारे सामने यह प्रकट करता है कि परमेश्वर किसे अच्छा भण्डारीपन मानता है।

1. परमेश्वर हमें वरदान (Gifts) सौंपता है

> 14 "क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा है, जिस ने परदेश जाते समय अपने दासों को बुलाकर अपनी संपत्ति उनको सौंप दी।
> 15 उस ने एक को पांच तोड़े, दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्थात् हर एक को उसकी सामर्थ के अनुसार दिया, और तुरंत परदेश चला गया।

परमेश्वर हमें वह सौंपता है जो उसका है। हमारे पास जो कुछ भी है वह वास्तव में उसी का है।

परमेश्वर हम में से प्रत्येक को उसके अनुसार सौंपता है जो वह देखता है कि हम संभाल सकते हैं। यह हम पर कोई सीमा (limit) लगाने के लिए नहीं है, बल्कि यह हम में से प्रत्येक के लिए शुरुआती बिंदु है। हम उसी से शुरुआत करते हैं जिसे हम उस समय संभाल सकते हैं।

हम पवित्रशास्त्र में देखते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को अलग-अलग वरदान, एक ही वरदान के अलग-अलग माप और अलग-अलग कार्य बांटता है (रोमियों 12:5, इफिसियों 4:7)। हमें दिए गए वरदानों के माप के अनुपात में हम सभी को अनुग्रह दिया गया है। परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक को उन स्थानों, भूमिकाओं और कार्यों में स्थापित किया है जैसा उसने उचित समझा और जैसा उसे प्रसन्न किया (1 कुरिन्थियों 12:18)।

2. आपको जो दिया गया है उसका उपयोग करें

हालांकि मत्ती 25 के पाठ में यह दर्ज नहीं है कि स्वामी ने अपने दासों को निर्देश दिए थे, हम सुरक्षित रूप से यह अनुमान लगा सकते हैं कि उसने ऐसा किया था। लूका में, पाठ कहता है: "उस ने अपने दासों में से दस को बुलाकर उन्हें दस मुहरें दीं, और उनसे कहा, 'मेरे लौटने तक लेन-देन करना।'" (लूका 19:13)।

हम जानते हैं कि हम यहाँ परमेश्वर की महिमा करने, लोगों की सेवा करने और उसके राज्य का विस्तार करने के लिए हैं। इसलिए हम इस उद्देश्य के लिए उस चीज़ का उपयोग करते हैं जो परमेश्वर ने हमें सौंपी है।

3. भय से नहीं, विश्वास से कार्य करें

> 25 और मैं डर गया, और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया...
> लूका 19:21 क्योंकि मैं तुझ से डरता था, इसलिये कि तू कठोर मनुष्य है...

इस कथा में आगे बढ़ते हुए, जिस व्यक्ति ने अपनी दी गई चीज़ के साथ कुछ नहीं किया, उसने कहा कि वह अपने स्वामी से डरता था... वह जानता था कि उसका स्वामी ऐसा व्यक्ति है जो वृद्धि और लाभ चाहेगा... और इसलिए वह गया और जो उसे दिया गया था उसे छिपा दिया और उसके साथ कुछ नहीं किया। उसने जो दिया गया था उसे बढ़ाने के लिए जोखिम (risks) नहीं उठाया, इस डर से कि वह विफल हो जाएगा और जो उसे दिया गया था उसे खो देगा। इसलिए, उसने कुछ नहीं किया।

असफलता का डर, जोखिम उठाने का डर, यह डर कि हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर पाएंगे, इत्यादि हमें अक्षम बना सकते हैं और हमें उस चीज़ का उपयोग करने से रोक सकते हैं जो परमेश्वर ने हमें दी है।

बेशक, जब आप उस चीज़ के साथ "व्यापार" या "लेन-देन" करना शुरू करते हैं जो आपको सौंपी गई है, तो जोखिम होता है। यहीं हमें **विश्वास में काम करना चाहिए** - यह जानते हुए कि परमेश्वर स्वयं हमें सफल होने में मदद करेगा।

4. परमेश्वर चाहता है कि हम बढ़ें (Grow)

इस कथा में यह निहित है कि स्वामी चाहता था कि उसके दास लाभदायक हों, बढ़ें और जो उसने प्रत्येक को दिया था उसमें वृद्धि करें।

परमेश्वर के राज्य में भी यही सच है। परमेश्वर वह नहीं है जो हमें सीमित करता है। वास्तव में, परमेश्वर वह है जो हमें अपनी सीमाओं से परे जाने, बढ़ने और उस काम में वृद्धि करने के लिए सशक्त बनाता है जो उसने हम में से प्रत्येक को करने के लिए सौंपा है।

हमें **वृद्धि, बढ़ोतरी और बहुगुणन** (multiplication) के संदर्भ में सोचने की आवश्यकता है। वृद्धि, बढ़ोतरी और बहुगुणन के लिए हमें परमेश्वर पर विश्वास करने की आवश्यकता है।

5. लाभदायक होने के लिए निवेश (Invest) करें

> 27 तो तुझे चाहिए था कि मेरा रुपया सर्राफों को दे देता, तब मैं आकर अपना धन ब्याज समेत ले लेता।

हम इस कथा से यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि स्वामी चाहता था कि उसका दास निवेश करे - या तो व्यापार करके, लेन-देन करके या कम से कम बैंक में जमा करके - ताकि वे लाभदायक हो सकें।

परमेश्वर ने हमें जो दिया है उसका उपयोग करने में हमें **स्मार्ट, बुद्धिमान और समझदार** होना चाहिए। परमेश्वर ने हमें जो दिया है, उसका उपयोग करने में हमें जानबूझकर (intentional) प्रयास करना चाहिए ताकि हम फल - वृद्धि, बढ़ोतरी, बहुगुणन देख सकें। यह केवल कुछ करने के बारे में नहीं है - बल्कि यह सुनिश्चित करने के बारे में है कि हम जो करते हैं उसमें फलदायी हों।

यीशु ने हमें सिखाया कि "मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत फल लाओ; तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।" (यूहन्ना 15:8)।

6. विश्वासयोग्य और लाभदायक बनें

स्वामी ने दो दासों की प्रशंसा करते हुए उन्हें "अच्छा और विश्वासयोग्य" कहा।

अच्छा का अर्थ है सद्गुण के मामले में, लाभकारी और फायदेमंद।
विश्वासयोग्य का अर्थ है भरोसेमंद, निर्भर रहने योग्य, कोई ऐसा व्यक्ति जिस पर भरोसा किया जा सके।

तो, हमें अपनी सौंपी गई चीज़ों का उपयोग इसी तरह करना चाहिए।
विश्वासयोग्य बनें। लाभदायक बनें।

7. हर किसी को जवाबदेह (Accountable) ठहराया जाएगा

> 19 बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी आया, और उनसे लेखा लेने लगा।

अंततः, हम सभी उस चीज़ के लिए परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हैं जो उसने हमें सौंपी है, दोनों "अल्पावधि" (near term) में जब हम पृथ्वी पर अपनी यात्रा कर रहे हैं, और "दीर्घावधि" (long term) में जब जीवन की यात्रा पूरी होने के बाद हम उसके सामने खड़े होंगे।

भण्डारीपन (Stewardship) परमेश्वर के प्रति जवाबदेही की इसी भावना के साथ जीवन जीना है। जब हम परमेश्वर के प्रति जवाबदेह होते हैं, तो हम उस मानवीय अधिकार के प्रति भी जवाबदेह होंगे जो उसने हमारे जीवन पर रखा है।

1 कुरिन्थियों 3:13: हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिये कि वह आग के साथ प्रगट होगा; और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है।
2 कुरिन्थियों 5:10: क्योंकि यह अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय-आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला पाए, जो उसने देह के द्वारा किए हों।
रोमियों 14:12 (इब्रानियों 4:13 भी देखें): सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।

8. वफादारी और लाभप्रदता को वृद्धि से पुरस्कृत किया जाता है

> 21 उसके स्वामी ने उससे कहा, 'धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास; तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।'

> लूका 19:17 और उसने उससे कहा, 'धन्य हे अच्छे दास; इसलिये कि तू बहुत ही थोड़े में विश्वासयोग्य निकला, दस नगरों पर अधिकार रख।'

हम यहाँ ध्यान देते हैं कि वफादारी और लाभप्रदता को वृद्धि से पुरस्कृत किया जाता है - कई चीजों पर अधिकार, दस शहरों पर अधिकार।

इसी तरह हम वफादारी और लाभप्रदता का प्रदर्शन करके परमेश्वर के राज्य में प्रगति या वृद्धि करते हैं।

प्रत्येक स्तर पर, जैसे-जैसे हम वफादारी और लाभप्रदता प्रदर्शित करते हैं, और परमेश्वर हमें बढ़ाता है, हमें परिणाम पर उसकी खुशी में भी हिस्सा मिलता है। "अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो" का यही अर्थ है। कुछ संस्करण (versions) इस वाक्यांश को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं:

* (CEV) "आओ और मेरी खुशी में शामिल हो!"
* (ERV) "आओ और मेरी खुशी मेरे साथ बांटो।"
* (GNB) "अंदर आओ और मेरी खुशी में हिस्सा लो!"
* (TPT) "तुम अपने स्वामी की खुशी का अनुभव करोगे, जो तुमसे कहेगा, “आओ मेरे साथ जश्न मनाओ!”"

भण्डारीपन का राज्य का नियम (Kingdom Law of Stewardship)

नियम 1: जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा (लूका 12:48)**
हम यह पिछले सप्ताह बुद्धिमान सेवक के दृष्टांत में देख चुके हैं।

आज हम भण्डारीपन का दूसरा नियम सीखते हैं:

नियम 2: जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा, और उसके पास बहुत हो जाएगा; परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। (मत्ती 25:29)**

परमेश्वर का राज्य इसी तरह काम करता है। यह थोड़ा विपरीत (counterintuitive) लगता है। हम सोचते हैं कि जिसके पास नहीं है, उसे हमें देना चाहिए। इसके बजाय, यीशु कहते हैं कि जिनके पास है, उन्हें और दिया जाएगा। बेशक, इसका एक संदर्भ है। संदर्भ **भण्डारीपन (stewardship)** है।

जब लोग अच्छे भण्डारी बन रहे हैं और वे लाभदायक हो रहे हैं और जो उन्हें दिया गया था उसमें वृद्धि कर रहे हैं - तो परमेश्वर उन्हें और अधिक सौंपता है। जब लोग बहुत कुछ नहीं कर रहे होते हैं या यहां तक कि उन्हें जो दिया गया था उसे बर्बाद कर रहे होते हैं, तो परमेश्वर उनसे "छीन लेता है" और उसे उन्हें दे देता है जो अच्छे भण्डारी हैं, ताकि उनके पास गुणा करने (multiply) के लिए और अधिक हो।

प्रभु की वापसी के लिए तैयार रहने का अर्थ है कि हम उस चीज़ के साथ वफादार और लाभदायक हैं जो उसने हमें यहाँ पृथ्वी पर सौंपी है। हम उस हर चीज़ का उपयोग जो उसने हमें दी है, उसकी महिमा करने, लोगों की सेवा करने और परमेश्वर के राज्य की उन्नति देखने के लिए करते हैं।